12

श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र-I

श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र (श्री ललिता के 1000 नाम) ब्रह्माण पुराण का भाग है जिसमें हयग्रीव और ऋषि अगस्त्य के मध्य का संवाद है जो संभवतः दक्षिणी भारतीय उपासकों के लिए प्रस्तुत किया गया है। यह परमात्मा के निर्देशन में हयग्रीव और ऋषि अगस्त्य के संवाद के माध्यम से आठ वाक् देवियों के द्वारा मूलतः रचित है। यह देवी ललीता त्रिपुरासुन्दरी की स्तुति में लिखा गया है जिसमें उनके गुणों, विजय, संघों, विभिन्न पहलुओं, महानता, परिपूर्णता, शक्तियों तथा अभिव्यक्तियों के बारे में बताया गया है। सहस्रनाम का हिन्दु धर्म में बहुत बड़ा महत्त्व हैं। क्योंकि इनमें लगभग सभी देवियों – पार्वती, दुर्गा, काली, लक्ष्मी, सरस्वती, भगवती आदि की पूजा तथा आध्यत्मिक

पूजा करने में भी इनका महत्त्व है। इनका प्रयोग पाठ, अनुष्ठान–पूजा, ध्यान और चिंतन आदि में किया जाता है। ये अपनी संरचनात्मक – संगठन में सूक्ष्म सौंदर्य, परम् शक्ति की अभिव्यक्तियों तथा अनगिनत शक्तियों को जानने में इनका आध्यात्मिक मूल्य बहुत अधिक है।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र में दिये गये मंत्रों का शुद्ध उच्चारण कर पाने में; और
- देवी ललीता के नामों का अर्थ जान पाने में ।

12.1 श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र (1-12)

श्री ललिता मातृ देवी है। जो दूर्गा रूप है और कामेश्वर (शिवजी) की अर्धाङ्गिनी है जो अपने आप में पारलौकिक और आसन्न शक्तियों को जोडती हैं। जो मेरू पर्वतमाला की चोटी पर नगर में पवित्र स्थान रहती हैं। इन्हें त्रिपुरासुन्दरी, तीन शहरों की सुन्दरी के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त है जो अपने लम्बे तथा लहराते केश, कमल जैसे नयन, चपल तथा अत्यधिक तेजवान शरीर के साथ अपनी चरम सुन्दरता और गति के लिए जानी जाती है। ये केवल स्त्रीतुल्य सुन्दर, घरेलू, प्यारी और नाजुक रूप में ही नहीं है बल्कि बहुत भयानाक, गौरववान, भय उत्पन्न करने वाले तथा बहुत साहसी भी हैं। ये देवी अपने भक्तों,

देवी–देवताओं, आध्यत्मिक गुरूओं, विद्यार्थीयों तथा सामान्यजनों के हृदय और मन पर अधिकार रखती हैं।

पुराणों का मानना है कि वे अपने उपासकों की पूजा–अर्चना, तथा भक्ति से शीघ्र ही प्रसन्न हो जाती हैं, और अपनें भक्तों को वरदान देती हैं। उन्होनें शिवजी के गणों की महासेवा – नित्य देवता, अवर्ण देवता तथा महान शक्तियों जैसे – चांदनी, अनिमा, महिमा, ब्रह्मी, कुमारी, ज्वालमालीनी, बाला, वैण्ठवी, वराही, महेन्द्री, चामुण्डी, महालक्ष्मी आदि का नेतृत्व करते हुए बाणासुर का वध किया था। ये देदीप्यमान देवी हैं जो कुण्डली के सभी चक्रों में स्थित है। निम्नलिखित प्रार्थना में उन्हें दोनो सर्वोच्च देवी तथा ब्रह्मा, विष्णु, महेश के रूप में स्वयं ब्रह्मा (परम्शक्ति) से उच्च शक्ति के रूप में संबोधित किया गया है। श्री ललितासहस्रनाम स्तोत्र बहुत ही सुन्दर प्रार्थना है जिसमें 182 श्लोकों (मंत्रों) में 1000 नाम दिये गये है।

।। न्यासः ।।

अस्य श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रमाला मन्त्रस्य । वशिन्यादिवाग्देवता ऋषयः। अनुष्टुप् छन्दः । श्रीललितापरमेश्वरी देवता । श्रीमद्वाग्भवकूटेति बीजम् । मध्यकूटेति शक्तिः । शक्तिकूटेति कीलकम् । श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी– प्रसादसिद्धिद्वारा चिन्तितफलावाप्त्यर्थे जपे विनियोगः ।

ये श्रीललितासहस्रनाम स्तोत्र के मंत्र है। वशिन्यादि वाक् देवता ऋषि है। अनुष्टुप् छंद है। श्रीललितापरमेश्वरी देवता हैं।

।। ध्यानम् ।।

सिन्दूरारुण विग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलि स्फुरत्
तारा नायक शेखरां स्मितमुखी मापीन वक्षोरुहाम् ।
पाणिभ्यामलिपूर्ण रत्न चषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं
सौम्यां रत्न घटस्थ रक्तचरणां ध्यायेत् परामम्बिकाम् ।।

ध्यान की स्थिति!

आओ हम उस देवी माँ का ध्यान करें, जिनके शरीर पर सिंदुर का लाल चढ़ा हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जसे माणिक जडित ताज पहने हुए हैं, जो चन्द्रमा के आभामण्डल से सुशोभित हैं, जिनके मुख पर सुन्दर चपल मुस्कुराहट है जो उनको दयावान रूप में इंगित कर रही हैं, उनके अंग बहुत सुन्दर है, उनके हाथ में रत्न–जग एक सुनहरा बर्तन है जिसमें अमृत भरा है तथा दुसरे हाथ में कमल पुष्प है।

12.1 श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र (13-25)

।। अथ श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रम् ।।

श्रीमाता श्रीमहाराज्ञी श्रीमत्–सिंहासनेश्वरी ।
चिदग्नि–कुण्ड–सम्भूता देवकार्य–समुद्यता ।। १।।

1) श्रीमाता — माँ जो अपार धन देती है जो सभी दुखों को दूर करती है और केवल सुख देती है।

2) श्रीमहाराज्ञी — वह कौन है जो ब्रह्मांड की देखभाल करने वाली महारानी है– उसकी सुरक्षा की भूमिका को इंगित करती हैं।

3) श्रीमत्सिंहासनेश्वरी जो शेरों के सिंहासन पर बैठता है, वह उसकी विनाश की भूमिका को दर्शाता है

4) चिद्गनिकुण्डसुम्भुता – वह जो ज्ञान की अग्नि से उठ गया और वह परम सत्य है

5) देवकार्यसमुद्यता – वह जो देवों की मदद करने में रुचि रखता है

उद्यद्भानु–सहस्राभा चतुर्बाहु–समन्विता ।

रागस्वरूप–पाशाढ्या क्रोधाकाराङ्कुशोज्ज्वला ।। २।।

6) त्रिबंगुसहस्राभा – वह जो हजार उगते सूरज की तरह चमकता है

7) चतुर्बहुस्मृति – वह जिसके चार हाथ हों

8) रागुंतपाशाढ्या – वह जिसे रस्सी (पासा) के रूप में सभी के लिए प्यार है–उसके पास उसके बाएं हाथ में एक है

9) क्रोधाकरङ्कुशोज्ज्वला – वह जो दाहिने हाथों में से एक अंगुसा के रूप में चमकती है और क्रोध करती है।

मनोरूपेक्षु–कोदण्डा पञ्चतन्मात्र–सायका ।

निजारुण–प्रभापूर–मज्जद्ब्रह्माण्ड–मण्डला ।। ३।।

10) मानसूपेक्षुकोदण्डा – वह जिसके पास मीठे बेंत का धनुष है, उसका मन उसके बाएं हाथ में है

11) पञ्चतन्मात्रिका – वह जिसके पास स्पर्श, गंध, श्रवण, स्वाद और दृष्टि के पाँच धनुष हैं

12) निजारूणप्रभापूरमज्जद्ब्रह्माण्डमण्डला – वह जो सारे ब्रह्मांड को अपने लाल रंग में डुबो देता है जो भोर के सूरज की तरह है

चम्पकाशोक–पुन्नाग–सौगन्धिक–लसत्कचा ।

कुरुविन्दमणि–श्रेणी–कनत्कोटीर–मण्डिता ।। ४।।

13) चम्पकाशोकपुन्नागसौगन्धिकलसत्चा – वह जो अपने बाल फूलों में पहनती है जैसे चंपक, पुन्नागा और सौगंधिका

14) कुरुविन्मनमिश्रेणीकंताको तारामण्डिता – जिसका मुकुट कीमती पत्थरों (पद्मराग पत्थर) की पंक्तियों के साथ चमकता है

अष्टमीचन्द्र–विभ्राज–दलिकस्थल–शोभिता ।

मुखचन्द्र–कलङ्काभ–मृगनाभि–विशेषका ।। ५।।

15) अष्टमीचन्द्रविभ्राजदलिकस्थलशोभिता – वह जिसके पास आधा चाँद जैसा सुंदर माथा है (अमावस्या से आठवें दिन दिखाई देता है)

16) मुखचन्द्रकलङ्काभामृगनाभिविशेषक – वह जिसके माथे में मस्क का थिलाका (बिंदी) है जो चंद्रमा में काली छाया की तरह है

वदनस्मर–माङ्गल्य–गृहतोरण–चिल्लिका ।

वक्त्रलक्ष्मी–परीवाह–चलन्मीनाभ–लोचना ।। ६ ।।

17) वदनस्मरमागलगल्याग्रृहतोरणचिल्लिका – वह जिसके पास सुंदर पलकें हैं जो उसके चेहरे पर आभूषणों की तरह दिखती हैं जो कि घर की तरह है

18) वक्त्रलक्ष्मीपरवाहलन्मीनाभलोहन – वह जिसके पास सुंदर आँखें हैं जो उसके चेहरे के तालाब में मछली की तरह दिखती हैं

नवचम्पक–पुष्पाभ–नासादण्ड–विराजिता ।

ताराकान्ति–तिरस्कारि–नासाभरण–भासुरा ।। ७ ।।

19) नवचम्पकपुष्पाभासनासादविराजिता – वह जो ताजे खुले फूलों की तरह चंपक है

20) ताराकांतितिरकारिनासाभरणभासुरा – वह जिसके पास एक नाक की अंगूठी है जो तारे से अधिक चमकती है

टिप्पणी

कदम्बमञ्जरी–कृल्प्त–कर्णपूर–मनोहरा ।

ताटङ्क–युगली–भूत–तपनोडुप–मण्डला ।। ८।।

21) कदम्बमञ्जरिकृल्प्तकर्णुरमनोहरा – वह जिसके पास कदंब के फूलों की तरह सुंदर कान हैं

22) ताटङ्कयुगलीभूततपनोडुपमण्डला – वह जो सूरज और चाँद को अपने कानों में लगाती है

पद्मराग–शिलादश–परिभावि–कपोलभूः ।

नवविद्रुम–बिम्बश्री–न्यक्कारि–रदनच्छदा ।। ९।।

23) पद्मरागशिलादशपरिभाविकपोलभूः – वह जिसके पास गाल हैं जो पद्मराग से बने दर्पण से अधिक चमकते हैं

24) नवविद्रुमबिम्बश्रीन्यक्कारिरदनच्छदा – वह जिसके होंठ सुंदर नए मूंगे के समान हैं

शुद्ध–विद्याङ्कुराकार–द्विजपङ्क्ति–द्वयोज्ज्वला ।

कर्पूर–वीटिकामोद–समाकर्षि–दिगन्तरा ।। १०।।

25) शुद्धविद्याङ्कुराकारद्विजपङ्क्तिद्वयोज्ज्वला – वह दाँत हैं जो अंकुरित सच्चे ज्ञान की तरह दिखते हैं

26) कर्पूरवीटिकामोदसमाकर्षिदिगन्तरा – वह मसाले के साथ सुपारी चबाता है जो सभी दिशाओं में इत्र देता है

निज–सल्लाप–माधुर्य–विनिर्भर्त्सित–कच्छपी ।

मन्दस्मित–प्रभापूर–मज्जत्कामेश–मानसा ।। ११।।

27) निजसल्लापमाधुर्यविनिर्भर्त्सतकच्छपी – वह जो सारावती देवी वीणा द्वारा निर्मित नोटों की तुलना में मधुर आवाज है (इसे कचाभी कहा जाता है)

28) मन्दस्मितप्रभापूरमज्जत्कामेशमानसा – जिसके पास प्यारी सी मुस्कान है, जो नदी के समान है, जिसमें कामदेव का मन खेलता है

अनाकलित–सादृश्य–चुबुकश्री–विराजिता ।

कामेश–बद्ध–माङ्गल्य–सूत्र–शोभित–कन्धरा ।। १२।।

29) अनाकलितसादृश्यचुबुकश्रीविराजिता – वह जिसके पास एक सुंदर ठोड़ी है जिसकी तुलना करने के लिए और कुछ नहीं है

30) कामेशबद्धमाङ्गल्यसूत्रशोभितकन्धरा – वह जो भगवान कामेश्वर द्वारा बंधी हुई गर्दन में पवित्र धागे के साथ चमकता है

कनकाङ्गद–केयूर–कमनीय–भुजान्विता ।

रत्नग्रैवेय–चिन्ताक–लोल–मुक्ता–फलान्विता ।। १३ ।।

31) कनकाङ्गदकेयूरकमनीयभुजान्विता – वह जो गोल्डन आर्मलेट पहनती है

टिप्पणी

32) रत्नग्रैवेयचिन्ताकलोलमुक्ताफलान्विता – वह जो मोतियों के साथ चलती मोती और डॉलर जड़ा हुआ हार पहनती है

कामेश्वर–प्रेमरत्न–मणि–प्रतिपण–स्तनी ।

नाभ्यालवाल–रोमालि–लता–फल–कुचद्वयी ।। १४ ।।

33) कामेश्वरप्रेमरत्नमणिप्रतिपणस्तनी – उसने अपने स्तनों को दिया जो रत्ना (कीमती पत्थरों) से बने बर्तन की तरह है और कामेश्वर का प्यार प्राप्त किया है

34) नभ्यालवालरोमालिलताफलकुचद्वयी – वह जिसके दो स्तन हैं जो उसके पेट से उठने वाले छोटे बालों के लता पर पैदा हुए फलों की तरह हैं।

लक्ष्यरोम–लताधारता–समुन्नेय–मध्यमा ।

स्तनभार–दलन्मध्य–पट्टबन्ध–वलित्रया ।। १५ ।।

35) लक्ष्यरोमलताधरतासमुन्नेयमध्यमा – उसे वहाँ से उठने वाले बाल जैसे लता की वजह से कमर पर शक है

36) स्तनभारदलन्मध्यपट्टन्धवलित्रया – वह जिसके पेट में तीन धारियाँ हैं जो ऐसा लगता है कि उसकी कमर को उसके भारी स्तनों से बचाने के लिए बनाया गया है

अरुणारुण–कौसुम्भ–वस्त्र–भास्वत्–कटीतटी ।

रत्न–किङ्किणिका–रम्य–रशना–दाम–भूषिता ।। १६ ।।

37) अरुणारुणकौसुम्भवस्त्रभास्वत्कटीतटी – वह जो अपनी छोटी लाल कमर पर पहने हुए हल्के लाल रेशमी कपड़े में चमकती है

38) रत्नकिङ्किणिकारम्यरशनादामभूषिता – वह जो कीमती पत्थरों से बनी घंटियों से सजी अपनी कमर के नीचे एक सुनहरा धागा पहनती है

कामेश–ज्ञात–सौभाग्य–मार्दवोरु–द्वयान्विता ।

माणिक्य–मुकुटाकार–जानुद्वय–विराजिता ।। १७ ।।

39) कामेशज्ञातसौभागयमार्दवोरुद्वयान्विता – वह जिसके पास सुंदर और कोमल जांघें हैं, वह केवल अपनी पत्नी कामेश्वर को जानती है

40) माणिक्यमुकुटाकारजानद्वयविराजिता – वह जिसके घुटने घुटने जैसे हैं, उसकी जाँघों के नीचे माणिक्य से बना हुआ ताज

इन्द्रगोप–परिक्षिप्त–स्मरतूणाभ–जङ्घिका ।

गूढगुल्फा कूर्मपृष्ठ–जयिष्णु–प्रपदान्विता ।। १८ ।।

41) इन्द्रगोपपरिक्षिप्तस्मरतूणाभजङ्घिका – वह जिसके पास इंद्र के कोपा नामक मधुमक्खी के बाद बाणों के गुच्छे के मामले की तरह है

42) गूढगुल्फा – वह जिसके पास टखने हैं

43) कूर्मपृष्ठजयिष्णुप्रपदान्विता – विह जो कछुए की पीठ की तरह ऊपरी पैर रखता है

नख–दीधिति–संछन्न–नमज्जन–तमोगुणा ।

पदद्वय–प्रभाजाल–पराकृत–सरोरुहा ।। १६ ।।

44) नखदीधितिसंछन्ननमज्जनतमोगुणा – वह जो अपने भक्तों के मन में नाखूनों की चमक से अंधेरा दूर करती है

45) पदद्वयप्रभाजलपराकृतसरोरुहा – वह जिसके दो पैर हैं जो कमल के फूल से बहुत अधिक सुंदर है

शिञ्जान–मणिमञ्जीर–मण्डित–श्री–पदाम्बुजा ।

मराली–मन्दगमना महालावण्य–शेवधिः ।। २० ।।

46) शिंञ्जानमणिञ्जीरमण्डितश्रीपदाम्बुजा – वह जिसके पास मणि पत्थर से भरे हुए संगीतमय पायल पहने हुए पैर हैं

47) मरालीमन्दगमना – वह जिसके पास हंस की तरह धीमी चाल है

48) महालावण्यशेवधिः – वह जिसके पास परम सौंदर्य का भण्डार है

सर्वारुणाऽनवद्याङ्गी सर्वाभरण–भूषिता ।

शिव–कामेश्वराङ्कस्था शिवा स्वाधीन–वल्लभा ।। २१। ।

49) सर्वारुणा – वह जो उसके सभी पहलुओं में भोर का हल्का लाल रंग है

50) अनवद्याङ्गी – वह जिसके पास सबसे सुंदर अंग हैं जिसमें सुंदरता के किसी भी पहलू की कमी नहीं है

51) सर्वभरणभूषिता – वह जो सभी आभूषण पहनती है

52) शिवकामेश्वराङ्स्था – वह जो कामेश्वर (शिव) की गोद में बैठती है

53) शिवा – वह जो शिव की पहचान है

54) स्वाधीनवल्लभा – वह जिसका पति उसकी बात मानता है

सुमेरु–मध्य–शृङ्गस्था श्रीमन्नगर–नायिका ।

चिन्तामणि–गृहान्तस्था पञ्च–ब्रह्मासन–स्थिता ।। २२ ।।

55) सुमेरुमध्यशृङ्गस्था – वह जो मेरु पर्वत के केंद्रीय शिखर में रहती है

टिप्पणी

56) श्रीमन्नगरनायिका – वह जो श्रीनगर का प्रमुख है (एक कस्बा)

57) चिन्तामणिग्रहान्तस्था – वह जो पूरी इच्छा से घर में रहती है

58) पञ्चब्रह्मासनस्थिता – वह जो पाँच ब्रह्मों पर विराजमान है।, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, एसाना और सदाशिव

महापद्माटवी–संस्था कदम्बवन–वासिनी ।

सुधासागर–मध्यस्था कामाक्षी कामदायिनी ।। २३।।

59) महापद्माटवीसंस्था – वह जो कमल के फूलों के जंगल में रहती है

60) कदम्बवनवासिनी – वह जो कदम्भा (मदुरई शहर को कदम्भा वाना कहा जाता है) के जंगल में रहती है

61) सुधासागरमध्यस्था – वह जो अमृत के समुद्र के बीच में रहती है

62) कामाक्षी – वह जो अपनी दृष्टि से इच्छाओं को पूरा करती है

63) कामदायिनी – वह जो चाहती है वह देती है

देवर्षि–गण–संघात–स्तूयमानात्म–वैभवा ।

भण्डासुर–वधोद्युक्त–शक्तिसेना–समन्विता ।। २४ ।।

64) देवर्षिगणसंघातस्तूयमानात्मवैभवा – वह जिसके पास सभी गुण हैं वह ऋषियों और देवों द्वारा पूजने योग्य है

65) भण्डासुरवधोद्युक्तशक्तिसेनासमन्विता – वह सेना से घिरा हुआ है जो बंदसुरा को मारने के लिए तैयार है

सम्पत्करी–समारूढ–सिन्धुर–व्रज–सेविता ।

अश्वारूढाधिष्ठिताश्व–कोटि–कोटिभिरावृता ।। २५ ।।

66) सम्पत्करीसमारुढसिन्धुरव्रजसेवीता – वह संपतकारी (जो धन देता है) हाथी ब्रिगेड से घिरा हुआ है

67) अश्वारूढाधिष्ठिताश्वकोटिकोटिभिरावृता – वह जो करोड़ों घोड़ों की घुड़सवार सेना से घिरा हुआ है

पाठगत प्रश्न– 12.1

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. चिदग्नि–कुण्ड– ..... देवकार्य–समुद्यता ।।
2. मनोरूपेक्षु– ..... पञ्चतन्मात्र–सायका ।
3. अष्टमीचन्द्र–विभ्राज– ..... –शोभिता ।

4. ताराकान्ति–तिरस्कारि– ..... –भासुरा

5. कर्पूर– ..... –समाकर्षि–दिगन्तरा ।।

6. ..... –प्रेमरत्न–मणि–प्रतिपण–स्तनी ।

7. ..... –कौसुम्भ–वस्त्र–भास्वत्–कटीतटी ।

8. महापद्माटवी– ..... कदम्बवन–वासिनी ।

आपने क्या सीखा?

- देवी ललीता के विभिन्न नाम।
- श्री ललीतासहस्रनामस्तोत्र का सार।

पाठांत प्रश्न

1. देवी ललीता के कुछ नाम बताते हुए उनके अर्थ भी लिखिए।
2. श्रीललीतासहस्रनामस्तोत्र पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तरमाला

12.1

1. सम्भूता
2. कोदण्डा
3. दलिकस्थल
4. नासाभरण
5. वीटिकामोद
6. कामेश्वर
7. अरुणारुण
8. संस्था